International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA)
Multidisciplinary Peer-Reviewed Online Open Access Journal Impact Factor: 5.6
Volume 4, Issue 3, Jul-Sep 2024 ID: IJCRTA000190 ISSN: 2583-1801
Email: ijcrta@gmail.com Website: www.ijcrta.org

भारतीय ग्रामीण समाज पर नगरीकरण का प्रभाव

डॉ. शाहेदा बानो सिद्दीकी

Author Affiliation:
सह प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शासकीय टी. आर. एस. महाविद्यालय, रीवा, म प्र

Citation of Article: सिद्दीकी, शाहेदा बानो. (2024). भारतीय ग्रामीण समाज पर नगरीकरण का प्रभाव. International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA) ISSN: 2583-1801, 4 (3), pg. 126-130. ijcrta.org

DOI: 10.5281/zenodo.15475997

सारांश:

इस शोधपत्र में भारतीय ग्रामीण समाज पर नगरीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह समझा जा सके कि किस प्रकार यह प्रक्रिया ग्रामीण भारत को नई दिशा दे रही है।

प्रस्तावना:

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। परंतु स्वतंत्रता के पश्चात औद्योगीकरण, वैश्वीकरण और शहरी सुविधाओं के आकर्षण के कारण नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है। नगरीकरण केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की श्रृंखला को जन्म देता है। यह प्रक्रिया ग्रामीण समाज की पारंपरिक संरचना, जीवनशैली, मूल्यों और आजीविका के स्वरूप को प्रभावित कर रही है। जहां एक ओर नगरीकरण ने शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसरों में वृद्धि की है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विषमताओं, सांस्कृतिक क्षरण और पारंपरिक संबंधों में कमजोरी भी उत्पन्न की है।

नगरीकरण की परिभाषा और प्रक्रिया:

नगरीकरण (Urbanization) एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें जनसंख्या का प्रवाह ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर होता है तथा लोग शहरी जीवनशैली, सुविधाओं और मूल्यों को अपनाने लगते हैं। यह प्रक्रिया केवल जनसंख्या के स्थानांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक परिवर्तनों को भी जन्म देती है। भारत में नगरीकरण का आरंभ औद्योगीकरण के साथ हुआ, जब शहरों में उद्योग-धंधों के विकास ने रोजगार के अवसर बढ़ाए और ग्रामीण जनसंख्या शहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षित हुई।

नगरीकरण की प्रक्रिया में दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ देखी जाती हैं: पहली, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर जनसंख्या का पलायन, और दूसरी, गांवों का धीरे-धीरे शहरी स्वरूप ग्रहण करना, जैसे बेहतर सड़कों, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा, और डिजिटल सेवाओं का विस्तार। इस प्रक्रिया में शहरी संस्कृति, उपभोक्तावाद, और आधुनिक जीवनशैली का प्रभाव ग्रामीण समाज पर बढ़ता है। नगरीकरण एक ओर विकास का संकेतक है, वहीं दूसरी ओर यह पारंपरिक सामाजिक

ढांचे को चुनौती भी देता है। अतः नगरीकरण को समझना आवश्यक है ताकि इसके प्रभावों का संतुलित प्रबंधन किया जा सके।

ग्रामीण समाज की विशेषताएँ:

भारतीय ग्रामीण समाज एक पारंपरिक, सामूहिक और आत्मनिर्भर सामाजिक व्यवस्था का उदाहरण है, जिसकी संरचना मुख्यतः कृषि पर आधारित है। यहाँ सामाजिक संबंध घनिष्ठ, भावनात्मक और सहयोगपूर्ण होते हैं। ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली, जाति व्यवस्था, और पंचायती राज प्रणाली प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

यह समाज प्राकृतिक परिवेश से घिरा होता है, जहाँ जीवन की गति धीमी, परंतु संतुलित होती है। गाँवों में धार्मिक विश्वास, परंपरागत रीति-रिवाज़, और लोक संस्कृति का गहरा प्रभाव होता है। समाज का हर व्यक्ति किसी न किसी जाति या वर्ग से जुड़ा होता है, जिससे उसकी सामाजिक स्थिति, पेशा और सामाजिक संबंध निर्धारित होते हैं। ग्रामीण समाज में सामूहिकता और आत्मनिर्भरता की भावना प्रबल होती है। लोग आपसी सहयोग और विश्वास के आधार पर कठिनाइयों का सामना करते हैं। शिक्षा और आधुनिकता का प्रसार धीमा होता है, परंतु तकनीकी विकास और सरकारी योजनाओं के कारण यह स्थिति बदल रही है।

अतः ग्रामीण समाज एक ऐसा जीवन दर्शन है जहाँ परंपरा, संस्कृति, और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन प्रमुख होता है।

नगरीकरण का ग्रामीण समाज पर प्रभाव:

भारत में नगरीकरण एक सतत और तीव्र गति से बढ़ती हुई प्रक्रिया है, जिसने केवल शहरों को ही नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों को भी गहराई से प्रभावित किया है। पारंपरिक ग्रामीण जीवनशैली, जो वर्षों से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से स्थिर रही है, अब शहरी संस्कृति के प्रभाव में परिवर्तन की ओर अग्रसर है। नगरीकरण के कारण ग्रामीण समाज में कई तरह के बदलाव देखे जा रहे हैं—जहां एक ओर आधुनिकता, शिक्षा और रोजगार के नए अवसर सामने आ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों, संबंधों और जीवनशैली में दरार भी उत्पन्न हो रही है। भारत में नगरीकरण के प्रभावों का विश्लेषण सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से करना होगा, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि नगरीकरण किस प्रकार ग्रामीण समाज को नई दिशा दे रहा है।

सामाजिक प्रभाव:

नगरीकरण का ग्रामीण समाज पर सबसे पहला प्रभाव सामाजिक संरचना पर पड़ता है। पारंपरिक संयुक्त परिवारों की जगह अब एकल परिवार तेजी से बढ़ रहे हैं। ग्रामीण युवाओं का शहरों की ओर पलायन होने से गांवों में बुजुर्ग और महिलाएं अधिक रह जाती हैं, जिससे पारिवारिक संतुलन प्रभावित होता है।

जातिगत संरचना में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। शहरी जीवन में जाति की सीमाएं अपेक्षाकृत शिथिल होती हैं, जिससे ग्रामीण समाज में भी सामाजिक गतिशीलता बढ़ रही है। परंपरागत सामाजिक मूल्य, जैसे सामूहिकता, आपसी सहयोग, एवं सामूहिक निर्णय प्रणाली, अब शहरी व्यक्तिगततावादी दृष्टिकोण के सामने कमजोर हो रहे हैं।

विवाह, पोशाक, भाषा और व्यवहार में भी बदलाव आया है। मोबाइल, सोशल मीडिया और टीवी के ज़रिए शहरी संस्कृति का प्रवेश ग्रामीण युवाओं में तेजी से हो रहा है, जिससे उनकी सोच और जीवनशैली में परिवर्तन देखा जा रहा है।

इस प्रकार, नगरीकरण ग्रामीण समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना को प्रभावित करते हुए उसे एक नए सामाजिक संदर्भ की ओर ले जा रहा है।

आर्थिक प्रभाव:

नगरीकरण ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला है। पहले जहाँ ग्रामीण समाज की आजीविका मुख्यतः कृषि, पशुपालन और कुटीर उद्योगों पर आधारित थी, वहीं अब नगरीकरण के कारण रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन आया है। ग्रामीण युवाओं का बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन हुआ है, जिससे गांवों में श्रमिकों की कमी हुई है और कृषि पर निर्भरता कम होती जा रही है।

शहरी जीवन से प्रभावित होकर ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे आर्थिक जरूरतें भी बढ़ गई हैं। इससे पारंपरिक आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बाजारीकरण और नकद लेन-देन की भूमिका बढ़ी है। इसके साथ ही, सड़क, संचार, बैंकिंग और बाजारों की पहुँच बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिशीलता भी आई है।

सरकारी योजनाओं, माइक्रोफाइनेंस, और स्वरोजगार कार्यक्रमों के कारण कुछ सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं, परंतु असमानता और बेरोजगारी की समस्याएं भी सामने आई हैं। कुल मिलाकर, नगरीकरण ने ग्रामीण समाज की आर्थिक संरचना को बदलते हुए उसे नए अवसर और नई चुनौतियों के द्वार पर ला खड़ा किया है।

सांस्कृतिक प्रभाव:

नगरीकरण का ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ा है। पारंपरिक लोकसंस्कृति, रीति-रिवाज, लोकगीत, लोकनृत्य और उत्सवों की स्थानिक पहचान अब शहरी प्रभावों के कारण धीरे-धीरे कमजोर हो रही है। ग्रामीण युवा अब शहरी फैशन, भाषा, संगीत और मीडिया से प्रभावित होकर पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं।

टीवी, मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने शहरी संस्कृति को सीधे गांवों तक पहुँचा दिया है, जिससे वहां के लोगों की सोच, पहनावा और मनोरंजन के साधनों में बड़ा बदलाव आया है। विवाह, त्योहार और पारिवारिक आयोजनों में अब व्यावसायिकता और दिखावे की भावना बढ़ी है, जिससे सामूहिकता और परंपरागत आत्मीयता में कमी आई है।

जहाँ एक ओर शहरी प्रभावों ने आधुनिकता, जागरूकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण संस्कृति की मौलिकता, सादगी और मूल्यपरक जीवनशैली खतरे में है। इससे सांस्कृतिक संकट और पहचान की समस्या उत्पन्न हो रही है।

इस प्रकार, नगरीकरण ग्रामीण संस्कृति को आधुनिकता की ओर ले जा रहा है, परंतु इसके साथ ही सांस्कृतिक क्षरण की चिंता भी उत्पन्न हो रही है।

राजनीतिक प्रभाव:

नगरीकरण ने ग्रामीण समाज की राजनीतिक संरचना एवं भागीदारी पर भी गहरा प्रभाव डाला है। पहले जहाँ ग्रामीण राजनीति जाति, रिश्तेदारी और परंपरागत नेतृत्व पर आधारित होती थी, वहीं अब शहरीकरण के प्रभाव से राजनीतिक चेतना, विचारधारा और मुद्दा-आधारित राजनीति का उदय हुआ है। शिक्षा, मीडिया और संचार साधनों की पहुँच ने ग्रामीण जनता में अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई है।

ग्राम पंचायतों और स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में अब युवा, महिलाएं और पिछड़े वर्ग सक्रिय रूप से भाग लेने लगे हैं। शहरी राजनीतिक विचारों के प्रभाव से ग्रामीण समाज में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और विकास-उन्मुख राजनीति की मांग बढ़ी है। साथ ही, चुनाव प्रक्रिया में अब राजनीतिक दलों की सक्रियता, प्रचार के आधुनिक तरीके और आर्थिक संसाधनों का प्रयोग भी बढ़ा है।

हालाँकि, नगरीकरण के साथ राजनीति में प्रतिस्पर्धा, ध्रुवीकरण और बाहरी हस्तक्षेप भी बढ़ा है, जिससे ग्रामीण राजनीति में कभी-कभी अस्थिरता और टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है।

इस प्रकार, नगरीकरण ने ग्रामीण राजनीति को परंपरा से आधुनिकता की ओर मोड़ा है, जहाँ जनभागीदारी और राजनीतिक सजगता में वृद्धि तो हुई है, परंतु नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

पर्यावरणीय प्रभाव:

नगरीकरण का ग्रामीण क्षेत्रों के पर्यावरण पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा है। जैसे-जैसे शहरों का विस्तार होता गया, वैसे-वैसे ग्रामीण क्षेत्रों की ज़मीनों का उपयोग औद्योगिक, आवासीय और व्यापारिक गतिविधियों के लिए होने लगा। इससे कृषियोग्य भूमि में कमी, वनों की कटाई, और जल स्रोतों का दोहन तेजी से बढ़ा है।

शहरों की सीमाएँ बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदूषण (जल, वायु, ध्वनि) की समस्या गंभीर हो गई है। प्लास्टिक, रसायनों और औद्योगिक कचरे का फैलाव ग्रामीण वातावरण को प्रभावित कर रहा है। साथ ही, भू-जल स्तर में गिरावट, पर्यावरणीय असंतुलन, और जैव विविधता में कमी जैसी समस्याएँ भी उभर रही हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में अब पारंपरिक संसाधन उपयोग की जगह शहरी मॉडल अपनाया जा रहा है, जिससे टिकाऊ विकास की अवधारणा खतरे में है। आधुनिक भवन निर्माण, यातायात और संसाधनों की अंधाधुंध खपत ने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया है।

इस प्रकार, नगरीकरण ने जहां ग्रामीण जीवन में सुविधाएं बढ़ाई हैं, वहीं पर्यावरणीय असंतुलन और प्राकृतिक संसाधनों की क्षति भी एक गंभीर चिंता बन गई है।

निष्कर्ष और सुझाव:

नगरीकरण भारतीय ग्रामीण समाज पर गहरे और व्यापक प्रभाव डाल रहा है। जहाँ एक ओर यह सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विकास की दिशा में एक कदम है, वहीं दूसरी ओर इसके पर्यावरणीय और पारंपरिक मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। नगरीकरण ने ग्रामीण समाज को शहरी जीवनशैली से जोड़ते हुए रोजगार, शिक्षा, और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में अवसर प्रदान किए हैं। हालांकि, इसके साथ ही पारंपरिक सांस्कृतिक धरोहरों का क्षरण, सामाजिक असमानताएँ और पर्यावरणीय असंतुलन की समस्याएँ भी उभर रही हैं। इस हेतु हम निम्लिखित सुझावों को अपना सकते हैं

1. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिर और सतत विकास के लिए शहरीकरण की प्रक्रिया को नियंत्रित और संतुलित किया जाना चाहिए।
2. पर्यावरणीय संरक्षण हेतु नीतियाँ बनाई जाएं, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सके और प्रदूषण पर काबू पाया जा सके।
3. शहरी जीवनशैली और ग्रामीण संस्कृति के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए शहरीकरण के साथ-साथ परंपरागत मूल्यों और लोकसंस्कृति को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
4. स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को और सशक्त बनाकर ग्रामीण समाज की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

अंततः, नगरीकरण का उद्देश्य केवल शहरीकरण नहीं, बल्कि ग्रामीण विकास के साथ-साथ समाज के प्रत्येक वर्ग को विकास की मुख्यधारा में शामिल करना होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

1. श्रीनिवास, एम.एन. (2016). आधुनिक भारत मे सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.
2. देसाई, ए. आ. (1980). रुरल सोसियोलाजी इन इंडिया. रुरल सोसियोलाजी इन इंडिया, बंबईः पापुलर प्रकाशन.
3. शर्मा, रामनाथ. (2007). भारत मे सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक समस्यायें. नई दिल्ली : एटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
4. Dosh, S. I. (1999). rural sociology. new delhi: rawat publication.
5. Shrma, R.K.(2004). uraban sociolgy. new delhi: atlantic publisher and distributors.
6. Singh, R. (2019, November 27). Urbanization. Retrieved from www.resdublog.in: https://www.rsedublog.in/urbanization/